ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–65
दिनांक: मंगलवार, 25 अगस्त, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन केअनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.5 एवं 25. 9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 82 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5से0मी0 गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 31.9 एवं दोपहर में 35.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि 49.2 मिमी वर्षा दर्ज की गई है।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(26–30 अगस्त, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 26 से 30 अगस्त, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान अवधि के दौरान 27–28 अगस्त के आसपास उत्तर बिहार के कई स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। गोपालगंज, सीवान, वैशाली एवं पश्चिमी चंपारण जिलों के कुछ स्थानों पर गरज–चमक के साथ मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है।
- इस दौरान अधिकतम तापमान 32–37°C तथा न्यूनतम तापमान 26–29°C के बीच रहने की संभावना है।
- सुबह के समय सापेक्ष आर्द्रता लगभग 85% तथा दोपहर के समय लगभग 50% रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमान अवधि में हवाएं मुख्यतः पूर्वी दिशा से 5–15 किमी प्रति घंटा की गति से चल सकती हैं।

समसामयिक सुझाव

- धान: तना छेदक एवं पत्ती लपेटक कीटों की नियमित निगरानी करें। प्रकोप दिखाई देने पर देर दोपहर के बाद क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4–जी दानेदार दवा 20–25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में समान रूप से छिड़काव की सलाह दी जाती है।
- मक्का: मक्का में तना छेदक एवं फॉल आर्मीवर्म के प्रकोप के लिए मौसम अनुकूल हैं। तना छेदक कीट प्रारंभ में कोमल पत्तियों को खाते हैं तथा बाद में गाभा एवं तने के अंदर प्रवेश कर गूदे को खाते हुए नीचे की ओर सुरंग बनाते हैं। प्रकोपित पौधों में गाभा सूखने एवं मुरझाने लगता है और इसे आसानी से खींचकर बाहर निकाला जा सकता है। ऐसे लक्षण दिखाई देने पर प्रभावित पौधों के गाभा में कार्बोफ्यूरान 3–जी दानेदार दवा 7 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से डालने की सलाह दी जाती है। फॉल आर्मीवर्म के प्रबंधन के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट दवा 0.5–0.6 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर प्रथम छिड़काव के 7 दिन बाद कोराजेन दवा 0.5–0. 6 मिली प्रति 15 लीटर पानी की दर से दूसरा छिड़काव करें।
- फूलगोभी: इस माह मध्यावधि फूलगोभी की किस्मों जैसे *पूसा हिम ज्योति, डी–96* एवं *पंत शुभ्रा* की बुआई करने की सलाह दी जाती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में बुआई के लिए 350–400 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बुआई से पहले 20–25 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाएँ। इसके साथ 120 किग्रा नाइट्रोजन, 60–80 किग्रा फास्फोरस, 40–60 किग्रा पोटाश, 10–15 किग्रा बोरेक्स एवं 1–2 किग्रा अमोनियम मोलिब्डेट प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- भिंडी: वर्तमान मौसम की परिस्थितियाँ भिंडी में लीफ हॉपर (हरा तेला) के प्रकोप के लिए अनुकूल हैं। अतः फसल की नियमित निगरानी करें। अधिक प्रकोप की स्थिति में पत्तियों पर छोटे–छोटे धब्बे दिखाई देते हैं तथा पत्तियाँ पीली पड़कर कमजोर एवं ऊपर की ओर मुड़ने लगती हैं। कीटों की संख्या अधिक होने पर डाइमेथोएट 30 ईसी दवा 1.5 मिली प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड दवा 0.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।
- पपीता: वर्तमान मौसम पपीते की बुआई के लिए अनुकूल है। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 300–350 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीज को बाविस्टिन दवा 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर 20×15 सेमी आकार के पॉलीबैग में बोएँ। नर्सरी में उठी हुई क्यारियों पर 7–10 सेमी की दूरी पर बीज बोएँ। जब पौध की ऊँचाई 20–25 सेमी हो जाए, तब खेत में रोपाई करें। उत्तर बिहार के लिए *पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, पूसा डिलिशियस, सी.ओ .–7, अर्का सूर्या* एवं *रेड लेडी* किस्मों की अनुशंसा की जाती है।
- टमाटर: शरदकालीन फसल के लिए बोआई करें। उत्तर बिहार के लिए सामान्य किस्मों में *अर्का विकास, अर्का अभेद, अर्का अलोक, अर्का अभिजीत, अर्का सौरभ, अर्का मेघाली, पूसा उपहार, पूसा रूबी, काशी शरद* एवं *काशी अनुपम*–11 तथा संकर किस्मों में *अर्का सम्राट, अर्का अपेक्षा, अर्का विशेष, पूसा दिव्या, अर्का वरदान, अर्का रक्षक* एवं *अर्का अनन्या* की अनुशंसा की जाती है। एक हेक्टेयर में सामान्य किस्मों के 400–500 ग्राम तथा संकर किस्मों के 150–200 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बोआई के 21–30 दिन बाद पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। सीमित बढ़वार वाली किस्मों में 60×45 सेमी, असीमित बढ़वार वाली किस्मों में 75×60–75 सेमी तथा संकर किस्मों में 90×60 सेमी की दूरी रखें। प्रति हेक्टेयर 200–250 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 किग्रा नाइट्रोजन, 80 किग्रा फास्फोरस एवं 80 किग्रा पोटाश प्रयोग करें। नाइट्रोजन को तीन बराबर भागों में रोपाई के समय, 20–25 दिन तथा 45–50 दिन बाद दें।
- पशुधन: गाय एवं भैंस में लम्पी स्किन डिजीज (स्कि) का प्रकोप हो सकता है। तेज बुखार, शरीर पर गांठें, गांठों के फटने से घाव, लंगड़ापन, चारा एवं पानी का कम सेवन तथा दूध उत्पादन में कमी इसके प्रमुख लक्षण हैं। पशुशाला की नियमित सफाई एवं कीटाणुनाशन, पशुओं की स्वच्छता तथा संतुलित आहार सुनिश्चित करें। प्रभावित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

आज का अधिकतम तापमानः 34.6 डिग्री सेल्सियस, जो से 2.2 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 25.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.7 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी